

धर्मसूत्र ब्रज्याचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 34

जाम सीरीवि



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
वृद्धाय ॥ कथं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
सर्वविघ्नो ह्यसि सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



[illegible]

माय ॥ १ ॥ ॥ हं नमः श्रीमदा मङ्गल नाथाय ॥ अथ वक्ष्यामि श्रीमानं इदं कथं प्रकथयन् ॥ श्रीसाक्षात्वा जयवीना  
गुह्यार्थं लिखितं ॥ १ ॥ विवृणुयुः प्रियं काका यत्कुरु कर्मज्ञानं ॥ ध्यात्वा त्रयं वक्ष्यामि तान् ॥ साक्षात् नमो नमो ॥ २  
रुक्मिणि रंगेय मध्ये बलं वक्ष्यामि तिरिः इदं कथं प्रकथयिष्यामि ॥ ३ ॥ उवाच यवक्ष्यामि तान् ॥  
नवक्ष्यामि तिरिः यक्षयाय मदा कर्मभा ॥ उवाच यवक्ष्यामि तान् ॥ ४ ॥ हृदयं इदं स्वयं मूढः ॥ काश्चिद्विषयं रुचिः वक्ष्यामि  
कथा कथं नार्थः साधुपतं विप्रद ॥ ॥ यनम्य नार्थं सवृद्धः ॥ रुगवक्षु नार्थं नः कथा कथं विप्रगुरु नः ॥ ५ ॥



स्ति नागक ॥ ३ ॥ मर्दिनायाममाथाय अनूकं याय मविरुवः मायाजावरिसुवाकोऽङ्ग भावविरुवायदं ॥  
॥ १ ॥ अज्ञानयक मज्ञानं कगयाव नवन सादिनायसव सत्वाना अनूकनदवया ॥ ॥ युकासकसव  
इरुगवासा सोडागगगुत्र महासमयक लङ् ॥ ॥ दियामयवियत्र ॥ ॥ रुगवानज्ञानकायस्य यदाविष  
स्ययीयगः मङ्ग यीज्ञानकायस्य ज्ञानमूर्ति सयस्रवां ॥ ॥ गरुवाथामुदावाथामहाधमसासिवासादिः  
मक्षमकत्यानि नामसगतिमूर्ति मायाति ॥ ॥ यानिगरुविनावद्वः लखिवकु दनागक यययनाथस

इयारुखकथयनय ॥ ॥ मायाजावमहाकले यावासिसयगीयनः महावङ्गधरदमेवयस्यमकु वविरि ॥ ॥  
अरुधनाभारिय्यामिः निथानवदधमयः ऊधरुगवायदनाथ सवसंवदगुष्टक ॥ ॥ युकासयकसः  
त्वाना ऊधामयविस्य वरः अक्षयकसनासायः अक्षयज्ञानदानय ॥ ॥ नवमक्षसगुष्टा वरुयानिगधगतकना  
ऊवियुतारुतयुक्ताकायास्ति नागन ॥ ॥ अक्षयनाज्ञानगधवायस ॥ ॥ अक्षयसामुनिरुगवानसवद्यादि  
यक्षामः निरुमयाय नास्ति नास्ति द्वा सप्रदासुता ॥ ॥ सिमंगद्यस्यताकानामयावनाड सावनः मेववैराम



कवनः श्रुमाया विमासन ॥ ॥ कश्चाक मायु रयद्या त्वक्का मद्रयामेय ॥ यत्तु हा घ ठ द्वा वडया विमदावन ॥ ॥  
साधू वड धन शोमान साधू वड यानय ऊ म ऊ ग द्वि नाथय ॥ मदाक न नयामि ॥ ॥ मदाया नाम सयी मि वि  
ना मय नाम निः म ऊ शो स न को य म म ऊ आ क म म ड क ॥ ॥ क म सा वृ द स या म म ऊ द न गृ ध क धि य म नू र म का  
ग म ना क म सा धू र ग वानि मि ॥ ॥ य मि व व न ग म धा व न ॥ ॥ जे ध सा वा म नि रु ग वान स क व म रु क व म द न म  
म वि शा ध व न य व सा क व म य ॥ ॥ सा का सा वा रु व क न सा का सा क के व म द न म द म ड क न सा य म दा धि

[illegible]



दा वा ग स जी स त्व ग नि क रः स दा म द म दा ध वः स र्व क र म दा वि य ॥ ३ ॥ म दा मा द म दा मा द म द वि मा द स  
द न म दा मा द म दा ध वः स र्व क र म दा वि य म दा ॥ ४ ॥ म दा मा द म दा मा रः स र्व आ र नि म द न म दा का मा म दा  
शो क म दा मा द म दा वि नि ॥ ५ ॥ म दा नू धा म दा का य म दा व र म दा व य म दा ना मा म दा दा वा म दा वि व म  
धु व ॥ ६ ॥ म दा य स य र्व डे व म दा क र म दा शो ग नि म दा य स म दा क र म दा शो ग नि म दा शो ग नि ॥ ७ ॥  
म दा मा या ध वा वि द्या म दा मा या ध वा ध क म दा मा या ध वा ध क म दा मा य द ड् डा वि क ॥ ॥ मा दा दा म य

मि श्र म दा मि श्र ध वा ग नि म दा क र म दा ध व म दा वि य म दा क र ॥ ८ ॥ म दा धा म दा धि म दा धा म दा धा म दा धा म दा धा  
म दा व र म दा पा य य नि धि स न मा ग य ॥ ९ ॥ म दा म द म था म था म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र  
म दा क र म दा वि द्धि व वा य ना म दा व र म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र ॥ १० ॥ म दा रा ग वा वि म र  
ना म दा व र ध वा य न म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र म दा क र ॥ ११ ॥ म दा वि द्या म दा धा म दा धा म दा धा म दा धा  
न था व द्धा म दा या न था ने र्म ॥ १२ ॥ व र धा र म दा म धु र म था व द्धा म दा म धु र म था व द्धा म दा म धु र म था व द्धा







नाकाशकवचयवधर्मधर्मगजाः शुभामात्मयुद्धमका ॥ १० ॥ सिद्धिं कुसिद्धिं सकल्य सर्वसकल्यतिवजिन् निवि  
वलयं कृयाभारुः धर्मभारु यवयथा ॥ ११ ॥ धर्मव्याप्यं सहाजं न हना वचनमरुः इतथा धर्मसुनिःसृष्टा न द्वयः  
सहृता ॥ १२ ॥ सास्तु विवधर्मगिः ध्यानध्यायधियं यं निःसृष्टा मवा गृहवचनं यवप्रार्थिका याधु व ॥ १३ ॥ यच्छताः ३  
ध्यामकावृद्धयच्छनमकाविरुः यच्छवृद्धमकाविरु यच्छवृद्धमकाविरु यच्छवृद्धमकाविरु ॥ १४ ॥ जनकसर्ववृद्धिनां वृद्धयुग यवयथा  
यच्छवृद्धमकाविरु धर्मध्यायधियं यं निःसृष्टा मवा गृहवचनं यवप्रार्थिका याधु व ॥ १५ ॥

नात वा मया ॥ ॥ वेवाचनमदादिपि सतथा विवेका वनङ्गयमियज्ञनाकः सदाकजयराध्व ॥ १६ ॥ विद्याजाङ्गः  
मकाङ्गमकाङ्गः मकाङ्गमकाङ्गः मकाङ्गमकाङ्गः मकाङ्गमकाङ्गः मकाङ्गमकाङ्गः ॥ १७ ॥ सर्ववृद्धमकाविरुः इगद्या  
नयवाचनविध्वयि विद्यानाकः यथा मानमदाविधि ॥ १८ ॥ वाचनयधर्ममकाः सदासमयमकाविरुः ॥ नत्तकयधर्मः  
श्रुति यानाकः मदेसका ॥ १९ ॥ अमाद्ययास विवकायिः वकायाममदागद वकायाममदायाग वकायाममदायाग ॥ २० ॥  
श्रुतिधर्मध्यायधियं यं निःसृष्टा मवा गृहवचनं यवप्रार्थिका याधु व ॥ २१ ॥



सुनसमानना ॥ ॥ यत्मा कुरु विद्युना ऊः वरु वरु यं वरु विद्यु वरु द वरु माया वरु मदा दया ॥ १ ॥ कविमधुः  
वरु यानि मदा ममुनरा य मः मः वरु वरु नाया वरु म य म धु व ॥ ३ ॥ दौ दौ काया मदा धायाः द्वे द्वे कायाः  
यानवाः मृष्टा मा मदा दा माः वरु दा मा मदा वना ॥ ॥ वरु म वरु वरु नाजा मदा मखः वरु वरु मदा मदा वरु दू का न ॥  
ः दू का ॥ २ ॥ वरु वा नायु द धाः वरु ख र्ति क म न विध व डि धा वा डि न क वा डि वरु द ॥ ३ ॥ वरु द्वा ना वा नाताः  
ः वरु द्वा ना मि ना वरु वरु वरु मदा या गः मया वरु वाना ॥ १ ॥ वरु वा मा वरु वरु वरु वा मे वरु विमद वरु का ठि नखाः

वरा वरु मा वरु न वरु वि ॥ ॥ वरु मा नाध यी मा न वरु वरु वरु वि न दा दौ दा मा नि धा रः मरु द्वा या वरु द वरु ॥ २ ॥  
मरु द्वा या मदा नायः मया वरु वरु मदा आका मधु रु य य कः द्वा द्वा द्वा म मा म ॥ १० ॥ आद म न दु मि द्वा न ग धा या  
धा ना साधु द म ॥ ॥ कथ ना रु क ने ना त्पः रु क का ठि वरु वरु म ना वा दि वि वरु मः ग मि ना दा वरु न ॥ १ ॥ धर्म मया  
मदा म दः धर्म ग दि मदा न अया मि वरु म नि द्वा न द म दि ग म द रू ॥ ॥ अरु धा वरु वरु ना द ॥ ना ना वरु धा म ना म य  
सर्व वरु धा वरु म यी वरु धा वरु वि मधु व ॥ ३ ॥ अय वरु मदा मा रुः मया वरु म द धनः मया वि ना न म ग रू ध म व



रुमक्षदय॥ ५ ॥ श्रीगणेशाय नमः॥

५



DH34

धर्मरत्न राजाचार्य सुरत श्री महाविहार